भजन

अगर पंजे वाले की रहमत ना होती
तो अर्श की रूहों का क्या हाल होता
झूठी जिमीं पर अगर तुम ना आते
तो हम बेसहारों का क्या हाल होता

1–दरगाहे मुकद्दस है ये दर मोमनों का
इस दर के लिए ब्रह्मा विष्णु तरसते
अगर उनसे अपनी निसबत न होती
तो अर्श के फकीरों का क्या हाल होता, अगर पंजे वाले..

2–जीते जी छोड़ेगें मुरदार दुनियां
यही तो पहचान है मोमनों की
खुदा और उम्मत को चाहें हमेशां
इन के सिवा जाने क्या हाल होता, अगर पंजे वाले..

3–हकीकत और मारफत का सजदा है इनका
शरीयत का सजदा बजाते नही है
सदा हक की लज्जत वो लेते यहीं पर
अर्श अजीम पर क्या हाल होगा, अगर पंजे वाले..

4–वजूदों को छोड़ो वाणी को समझो
वाणी तो है श्री श्यामा जी की रसना
कब्रों से मुरदे अब उठ रहे हैं
न उठने वालों का क्या हाल होगा, अगर पंजे वाले..